ISSN : 2278-4632

JUNI KHYAT
जूनी ख्यात

इतिहास, कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका

A Peer-Reviewed and Listed in UGC Care List

JUNI KHYAT

जूनी ख्यात

(सामाजिक विज्ञान, कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका)

वर्ष : 11 • अंक 2

जनवरी-जून 2022

A Peer-Reviewed and Listed in UGC CARE List

ISSN 2278-4632

संपादक

डॉ. बी. एल. भादानी

प्रोफेसर

प्रबंध संपादक

श्याम महर्षि

मरुभूमि शोध संस्थान

संस्कृति भवन

एन.एच. 11, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राजस्थान

- Experiential Learning in Schools : A study in Guwahati City, Assam 233
  - *Dr. Saru Joshi*
- Pragmatic Acumen To Sustainability 244
  - *Siddharth Srivastava*
- मध्यकालीन शहर ओरछा पर्यावरण की दृष्टि से एक अध्ययन 252
  - *सफ़िया ख़ान*
- मुगल काल में मुस्लिम महिला शिक्षा 263
  - *डॉ. शोभा सिंह*
- मध्यकालीन सौहार्दपूर्ण संस्कृति और हिंदुस्तान 272
  - *डॉ. मनीष श्रीमाली*
- मध्यकाल में रंगाई छपाई उद्योग : मारवाड़ के सन्दर्भ में 285
  - *डॉ. मधु कुमावत*
- गुरु जम्भेश्वरजी की सबदवाणी एवं भक्ति आन्दोलन 293
  अनिला पुरोहित • वंदना चौधरी
- जयपुर शैली के लघुचित्रों में नायिका-भेद अंकन 298
  - *डॉ. रीतिका गर्ग*
- पुष्करणा ब्राह्मण समाज की सामाजिक व्यवस्था एवं बीकानेर राजवंश के साथ सम्बन्ध 304
  - *डॉ. मुकेश हर्ष*
- मारवाड़ में दशनाम सम्प्रदाय की भूमिका तथा रियासत द्वारा मठों को आवंटित पट्टे : एक आर्थिक विश्लेषण 314
  डॉ. दिनेश राठी • हुमा गोस्वामी
- महिला उत्थान में गाँधी चिंतन के निहितार्थ 320
  डॉ. मृदुला शर्मा

Scanned with Oken Scanner

मध्यकालीन सौहार्दपूर्ण संस्कृति और हिंदुस्तान

• डॉ. मनीष श्रीमाली

भारतीय उपमहाद्वीप विविधताओं का संसार है यहाँ धर्म, जाति, भाषा, लिंग तथा प्रकृति में विविधता देखने को मिलती है। इतनी अधिक विविधताओं की वजह से कई विचारक इसे अस्वाभाविक राष्ट्र की संज्ञा देते हैं। कई विचारक दीर्घकाल तक इन विविधताओं में एकता को बनाए रखने की भारतीयों की योग्यता पर संदेह व्यक्त करते हुए भविष्य में इसकी एकता अर्थात् इसके अस्तित्व पर प्रश्न-चिह्न लगाते हैं इनमें जॉन स्ट्रेची और रूपायर्ड किपलिंग प्रमुख हैं।[1] उपर्युक्त विचारकों का यह संदेह इतिहास के सबक पर आधारित था। प्रथम विश्व युद्ध का एक प्रमुख कारण यही 'एक राष्ट्रीयता एक राज्य' का सिद्धांत था जिसे ऑस्ट्रिया-हंगरी जैसे बहुप्रजाति वाले राष्ट्र और वहाँ चल रहे आन्दोलन चुनौती देते हैं। अंततः प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यहाँ कई नवीन राज्यों का उदय हुआ।[2] किंतु भारतीयों ने इतिहास को यहाँ दोहराने का अवसर प्रदान नहीं किया। भारत के इतिहास पर प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि यहाँ के निवासियों में सहिष्णुता एक आधारभूत गुण रहा है। जिसने सामासिक संस्कृति के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और भारत को खण्डित होने से बचाए रखा। यही भाव हमें कवि इकबाल की कविता 'तरानए-हिंदी'[3] में मिलते हैं जब वे कहते हैं—

'युनान-ओ-मिस्त्र-ओ-रोम सब मिट गये जहाँ से
अब तक मगर है बाकी नामो-निशान हमारा।।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-जहाँ हमारा।।'

भारतीय संस्कृति की दीर्घजीविता का सबसे महत्वपूर्ण कारण इसकी सहिष्णुता तथा अन्य बाह्य तत्त्वों को अपने में आत्मसात करने की विशेषता है।

ISSN 2278-4632

Scanned with Oken Scanner

सहिष्णुता का गुण भारतीयों में कितनी गहरी पैठ बनाए हुए है इसका आभास तो इस के राष्ट्र के नाम से ही हो जाता है। भारत एवं हिंदुस्तान नाम स्वयंमेव सहिष्णुता के महत्वपूर्ण उदाहरण है। जहाँ ब्रह्म पुराण के अनुसार दुष्यन्त-शकुन्तला के पुत्र भरत[4] के नाम पर इस देश का नाम भारत वर्ष पड़ा माना जाता वहीं जैन धर्म के अनुसार आदिनाथ ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम पर तो ऋग्वैदिक भरत जन के नाम पर भारत होना स्वीकार जाता है।[5] जैन व हिन्दू दोनों अपनी-अपनी परम्पराओं का उल्लेख करते है किंतु इनका दावा कहीं अतिवादी या उग्रवादी रूप धारण नहीं करता है। जहाँ पश्चिम अपनी भौतिकतावादी संस्कृति के लिए जाना जाता है वहीं पूर्व अपने ऊर्वर धार्मिक विचारों एवं अध्यात्म के प्रणेता के रूप में जाना जाता है। भारत जो विश्व के सबसे प्राचीन सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व करता है उसके धर्म को हिन्दू नाम भी 'सिंधु नदी' के माध्यम से ईरानियों द्वारा मिला। ईरान में बहुत पहले से सिंधु (नदी) के लिए हिन्दू शब्द का उच्चारण होता था, क्योंकि प्रारंभिक ईरानी भाषा में 'स' का 'ह' हो जाता हैं।[6] ईरानी शासक दारा के बहिस्तून और पर्सीपोलीस स्तंभ लेख में भी सिंधु के लिए हिन्दू आया है।[7] इसी विकृति से आगे चलकर हिन्दू और हिन्दुस्तान, दोनों शब्द निकले। बाबर भी अपनी पुस्तक बाबरनामा में हिंदुओं का देश होने की वजह से इसे हिंदुस्तान कहता है।[8] तेरहवीं सदी के बाद से उक्त शब्द अपने संकीर्ण अर्थ में अधिक प्रमुखता के साथ व्यवहार में आने लगा और हिन्दू धर्म ने धार्मिक रंग का रूप ले लिया।[9] इस समय विजयनगर के शासक और मेवाड़ के शासकों की उपाधियों में उक्त शब्द दृष्टिगत होते हैं, जैसे कुंभा को मुस्लिम शासकों द्वारा हिन्दू सुरत्राण[10] का खिताब दिया गया तो राणा सांगा को 'हिन्दूपत' का खिताब मिला।[11] इसी प्रकार यूनानियों के मुख से 'ह' के बदले 'अ' निकलता था, अतएवं, हिन्दू को उन्होंने इन्दो (Indo) कहा। इसी दूसरी विकृति से 'इंडिया' नाम निकला। इटली के कवि वर्जिल ने इंडिया के बदले केवल 'इन्द' लिखा है वहीं मिलटन ने भी भारत का नाम 'इंद' ही लिखा है।[12]

भारत के नाम के अलावा यह धर्म भी विविधताओं से पूर्ण है। हिन्दू धर्म जिसे सनातन धर्म भी कहते हैं।[13] इसके किसी भी प्रवर्तक का उल्लेख नहीं मिलता है जैसे कि मुस्लिम के पैगम्बर मोहम्मद, बौद्ध धर्म के गौतम बुद्ध है।[14] हिन्दू धर्म या ब्राह्मण धर्म एक दीर्घकालीन विकास का परिणाम हैं। जहाँ यास्क के निरूक्त में देवताओं की संख्या मात्र तीन बताई गई है।[15] वहीं ऋग्वैदिक काल में तैतीस देवताओं का उल्लेख मिलता है[16] किंतु हिन्दू धर्म की उदारता, सहिष्णुता एवं व्यापक व सरलता से आत्मसात्त करने की प्रवृत्ति ने हिन्दू देवी-

देवताओं की संख्या को 33 करोड़ तक पहुँचा दिया। देवी-देवताओं के अनगिनत स्वरूप होने की वजह से आमजन को हर रूप में सुलभ है।[17] बहुदेववाद के साथ ही यहाँ एकेश्वराद के तत्व भी निहित हैं जिसकी अभिव्यक्ति ऋग्वेद में भी मिलती है[18] तो चरम अभिव्यक्ति शंकराचार्य के अद्वैतवाद में मिलती हैं।[19] यहाँ विभिन्न धर्मों के साथ उसके दर्शन में भी विंभिन्नता देखने को मिलती है। यहाँ प्राचीन से लेकर मध्यकाल तक धर्म के दो अतिवादी विचारों, अर्थात् अति कठोर एवं विलासिता के दर्शन भी होते हैं तो संतुलित मार्ग का अनुसरण भी दिखाई देता हैं। जैन धर्म जहाँ अति काया क्लेश पर जोर देता है वहीं चार्वाक दर्शन विलासिता पूर्वक जीवन जीने का समर्थन करता हैं।[20] बौद्ध धर्म दोनों अतिवादी विचारों को नकारता है एक व्यवहारिक धर्म की भांति मध्यम मार्ग का अनुसरण करता है।[21] इसी प्रकार के विचार मध्यकाल के सूफी संतों के जीवन में भी दिखाई देता है। चिश्ती संत राजकीय सहायता को स्वीकार नहीं करते थे बल्कि सादा जीवन जीने में विश्वास करते थे वही सुहरावर्दी संतों का राजकीय सहायता प्राप्त कर, पद लेने तथा आरामदायक जीवन जीने में विश्वास था।[22] हिन्दू धर्म जहाँ प्रारभ में शैव, वैष्णव एवं शाक्त धर्मों के रूप में बंटा हुआ था। वहां भी अवतारवाद एवं भक्ति के माध्यम समाज में एकता स्थापित की गई थी। महाजनपद काल का प्रारंभ होते ही बदलती सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार ब्राह्मण धर्म के विरोध में कई धर्म अस्तित्व में आए। इस समय गंगा घाटी में 68 धर्म प्रचलित थे।[23] इतने बड़े स्तर पर ब्राह्मण धर्म के प्रति विरोध एवं असंतोष ने समाज के बिखराव एवं हिन्दूधर्म के अस्तित्व पर संकट खड़ा कर दिया। हिन्दूधर्म की सामाजिक प्रतिरोध की सुदृढ़ आंतरिक व्यवस्था ही थी जिसने भारत को टूटने से बचाया। ब्राह्मण विरोधी धर्म या तो समय के साथ अप्रासंगिक हो गया या हिन्दू धर्म का ही अंग बन गया। जैन एवं बौद्ध धर्म जो इस समय के मुख्य धर्म थे। बौद्ध जो ब्राह्मण धर्म के विरोध स्वरूप अस्तित्व में आया वही कालांतर में विष्णु के दस अवतारों में एक बन कर हिन्दू धर्म के निकट आ गया।[24] इसी प्रकार का प्रतिरोध एवं नवीन मत के उद्भव का उल्लेख मध्यकाल में भी मिलता है। इस समय क्रांतिकारी विचारों से प्रेरित वीरशैव लिंगायत मत अस्तित्व में आया। यह क्रांतिकारी विचारों पर आधारित सम्प्रदाय था। यह जाति प्रथा का विरोधी था।[25] इस सम्प्रदाय का उद्भव ऐसे समय हुआ जब हिन्दू एवं मुस्लिम समाज रूढ़िवादी एवं कट्टरवादी विचारों के प्रभाव में था। समाज में कई बुराईयां घर कर गई थी। जाति प्रथा अपने कठोर रूप में थी जिसने सामाजिक असंतोष को जन्म दिया। ऐसे समय में साम्प्रदायिक सौहार्द स्थापित करने के साथ-साथ हिन्दू एवं मुस्लिमों में भी समन्वय बनाये

ISSN 2278-4632

Scanned with Oken Scanner

रखने की आवश्यकता थी। भक्ति एवं सूफी संतों ने इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन संतों में कबीर एवं नानक महत्वपूर्ण थे। गुरु नानक हिन्दू एवं मुस्लिम के बीच अंतर नहीं मानते हैं। वे आत्मा के धर्म को प्रोत्साहन देते हैं जो सार्वलौकिक स्वभाव का तथ्य है।[26]

भक्ति आन्दोलन जो 15वीं-16वीं शताब्दी का यह लोकप्रिय एकेश्वरवादी आन्दोलन था। इसकी एक महत्वपूर्ण विशेषता इसके संतो का निम्न वर्ग से होना था। कई ब्राह्मण संतो ने भी जाति व्यवस्था का विरोध किया। भक्ति आन्दोलन के नायक जो उन्हीं के बीच से आये थे और उन्होंने इन साधारण लोगों से उन्हीं की भाषा में बातें की और उन्हें सारतः उच्च नैतिक संदेश प्रदान किये। इस आन्दोलन का चरित्र गुरु अर्जुन देव (1606 ई.) की वाणी में दिखाई देता है जिसे उन्होंने धन्ना जाट के नाम से लिखा था—

नामदेव का हृदय गाता रहता गोविन्द! गोविन्द! गोविन्द!
आधी दमड़ी का वह कपड़ा छापने वाला बन गया लखपति
ताना कातना और कपड़ा बुनना छोड़ कबीर हरिप्रेम में डूब गया।
देखो तो जात का जुलाहा और बन गया दिव्य विभूति
और रामदास उमर-भर में पशुओं को ठिकाने लगाता तर गया
साध संगत से बन गया आप महान और पाथे हरिदर्शन

सेना, नाई था जो गाँव भर का टहलुआ (और अब) घर-घर पूजा होती उसकी और हृदय में प्रभुवास सन्तों में गिने जाते है महाराज अब, यह सब वृत्तांत सुन एक जाट ने प्रभु चरणों में लगा दिया है स्वयं को मैं अपने भगवान से मिला हूँ और धन्य हो गया जीवन मेरा।[27]

इस प्रकार भक्ति संतों में निम्न वर्ग को समाज में प्रतिष्ठापूर्ण स्थान मिला वहीं जाति बंधन भी कमजोर हुआ। सूफी संतों ने भी कबीर व नानक के समान हिन्दू-मुस्लिम धर्म का एक-दूसरे को समीप लाने का कार्य किया। सूफी दर्शन पर वैसे भी बौद्ध दर्शन व उपनिषदों का प्रभाव माना जाता है। भारत में आने पर यहाँ रहने पर दोनों का एक दूसरे पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। सूफियों पर वेदान्त एवं नाथ सम्प्रदाय का प्रभाव देखा जा सकता है। सूफी संत उस्मान पर वेदांत दर्शन का प्रभाव था। कासिमशाह ने अपनी रचना 'हंस जवाहिर' में अल्लाह का नामकरण नाथयोगियों तथा गोरक्षपंक्षियो के अनुरूप किया है—वह अलख है, वह अकेला है, प्रकट तथा गुप्त सभी रंगों में वही खेल खेल रहा हैं।[28]

जहाँ आधुनिक काल में भाषा धर्म से जुड़ गई और सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गई थी। वहीं भाषा मध्यकाल में सहिष्णुता एवं सामासिक संस्कृति की वाहक बनी। इसमें भक्ति एवं सूफी संतों की भूमिका महत्वपूर्ण रही क्योंकि उन्होंने अपने उपदेश की भाषा क्षेत्रीय भाषा को ही बनाया था।[29] यहाँ कई हिन्दी भाषी सूफी संत देख सकते हैं जिन्होंने उत्कृष्ट साहित्य की रचना की जैसे—मंझन (मधुमालती), कुतुबन (मृगावती), जायसी (पदमावत), उस्मान (चित्रावली), कासिमशाह (हंस जवाहिर) तथा शेख अब्दुल कद्दुसी गंगोही (रूश्दनामा) आदि प्रमुख है। जिन्होंने काव्य के माध्यम से सूफीमत का विवेचन किया।[30] सूफी संत शेख मोहिदी के शिष्य मलिक मुहम्मद जायसी ने विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ पदमावत की रचना कर दी जो हिन्दू हृदय के मर्म को स्पर्श करने वाला है। हिन्दू-मुस्लिम कट्टरता को दूर करने का जो प्रयास कबीर ने झाड़-फटकार के करने का प्रयास किया जायसी ने उसे हिन्दू हृदय की संवेदनाओं को छू कर किया। मुसलमान होकर हिन्दूओं की कहानियाँ हिन्दूओं की ही बोली में पूरी सहृदयता से कहकर उनके जवीन की मर्मस्पर्शी अवस्थाओं के साथ अपने उदार हृदय का पूर्ण सामंजस्य दिखा दिया।[31]

जहाँ मध्यकाल को धार्मिक कट्टरता का काल भी कहा जाता है। जैसा विश्व के इतिहास में दिखाई देता है। जेरूसलम को लेकर ईसाई एवं मुस्लिमों में कई वर्षों तक धर्म युद्ध चला जिसमें कई हजारों लोगों ने अपने प्राण गवाएँ।[32] पोप इतना शक्तिशाली था कि राजा भी उसके आदेशों की अवेहलना नहीं कर सकता था। पोप के आदेश या चर्च की अवेहलना नहीं करने पर जिन्दा जला दिया जाता था। धर्म की ऐसी कट्टरता भारत में नहीं दिखाई देती है। भारत में तो एक स्वस्थ समन्वित संस्कृति के दर्शन होते हैं। यहाँ कुछ अपवादों को छोड़ कर राजा धार्मिक कट्टर नहीं रहा। यहाँ धार्मिक समन्वय के अनूठे दर्शन तो भिन्न-भिन्न धर्म के किन्तु समर्पित गुरु एवं शिष्य की जोड़ियों में होते हैं। दादूदयाल के प्रसिद्ध शिष्य रज्जबजी थे जिन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता का संदेश दिया। राजस्थान के संत सुन्दरदास ने इस सम्बन्ध में कहा है कि मैंने न तो हिन्दू मार्ग को अपनाया न मुसलमान के मार्ग को ही। किन्तु मुझे सहजावस्था में राम और अल्लाह दोनों एक ही दृष्टिगोचर हुए है।

हिन्दू की हदि छाड़िकैं, तजी तुरक की राह।
सुन्दर सहजै चीन्हियां, एकै राम अल्लाह।।[33]

इस क्रम में दिल्ली के पठान सरदार 'रसखान' का नाम महत्वपूर्ण हैं ये बड़े 'कृष्ण भक्त' थे तथा गोस्वामी विट्ठलनाथ के शिष्य थे। इन्होंने कृष्ण भक्ति

पर 'प्रेमवाटिका' की रचना की थी। ब्रजभूमि के सच्चे प्रेम से परिपूर्ण रसखान के संदर्भ में प्रसिद्ध है—

मनुष्य हो तो वही रसखान बसैं संग गोकुल गाय के ग्वारन।[34]

हिन्दू-मुस्लिम गुरु परम्परा से बढ़कर घर-घर में राम की कथा को पहुँचाने वाले तुलसीदास और प्रसिद्ध मुगल सेनापति बैरम खाँ पुत्र अब्दुल रहीम खान खाना की मित्रता भी अद्‌भुत थी। ऐसी जनश्रुति है कि एक बार ब्राह्मण अपनी कन्या के विवाह के लिए धन न होने से घबराया हुआ गोस्वामी जी के पास गया गोस्वामीजी ने उसे रहीम के पास भेजा और दोहे कि यह पंक्ति लिखकर दे दी—

'सुरतिय नरतिय नागतिय यह चाहत सब कोय'

रहीम ने उस ब्राह्मण को बहुत-सा द्रव्य देकर विदा किया और दोहे की दूसरी पंक्ति इस प्रकार पूरी करके दी—

"गोद लिये हुलसी फिरै तुलसी सो सुत होय"।[35]

ये मध्यकाल की धार्मिक सहिष्णुता के जीवंत उदाहरण है जो किसी स्वार्थवश नहीं अपितु स्नेहवश सम्बन्धों को प्रगाढ़ बनाए हुए थे।

सामासिक संस्कृति के निर्माण में निश्चय ही भक्ति-सूफी संत तथा आम जन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। किंतु सामासिक संस्कृति के निर्माण में यहाँ के शासकों की भूमिका को कतई कमतर नहीं आंका जा सकता है। भारत राष्ट्र जो अध्यात्म की ऊर्वर भूमि रही है अत: यही वजह है कि यहाँ कई धर्म प्रचारक भी आए और कई विदेशी आक्रमणकारी भी आए। कई विदेशी शासक तो न केवल यहीं के होकर रह गए अपितु उन्होंने यहाँ के धर्म को भी स्वीकार कर लिया। इनमें मिनेण्डर, कनिष्क, भागभद्र आदि कई नाम प्रमुख है। इसी प्रकार की सामासिक संस्कृति के दर्शन मध्यकाल में भी होते हैं। जिसे विश्व इतिहास के संदर्भ के अंधकार के काल की संज्ञा दी है। ईसाई धर्म जिसके संदर्भ में माना जाता है कि पहलव शासक गोण्डोफर्निस के समय ईसाई संत टामस भारत आए थे।[36] इसी प्रकार पूर्तगाली गर्वनर अल्फांसो डिसूजा के समय फ्रांसिस जेवीयर भारत आए। ईसाई धर्म का यद्यपि बहुत गहरा प्रभाव यहाँ नहीं पड़ पाया क्योंकि यह प्रत्यक्षत: शासक वर्ग से भी नहीं जुड़ा था और इसका आमजन से भी प्रत्यक्ष सम्पर्क वृहद स्तर पर नहीं हो पाया था। यद्यपि अकबर के समय उल्लेख मिलता है कि नेपल्स का जेसुईट पादरी एकाबिवा ने बीजापुर की राजकुमारी को मुगल दरबार में जाने के एक माह पूर्व ही ईसाई धर्म में दीक्षित किया था। यद्यपि ये

राजनीतिक कारण से अधिक व धार्मिक कम था।[37] मुगल दरबार में ईसाई धर्मप्रचारकों को काफी स्वतन्त्रता प्रदान कर रखी थी। अकबर ने मिशनरियों को आगरा व लाहौर में गिरजाघर बनाने के लिए केवल आज्ञा ही प्रदान नहीं की थी अपितु सार्वजनिक रूप से पूजा-पाठ करने, त्यौहार मनाने तथा हिन्दू-मुसलमानों को ईसाई धर्म में दीक्षित करने की आज्ञा भी दी।[38] अकबर ने यहाँ तक कि अपने दस वर्षीय पुत्र मुराद को ईसाई धर्म की शिक्षा एवं पुर्तगीज भाषा सीखने के लिए मोंसेरात को नियुक्त किया।[39] यहाँ ईसाईयत के प्रति झुकाव का सबसे बड़ा उदाहरण जहाँगीर के समय मिलता है विलियम फिंच के अनुसार दानियाल के बेटों और जहाँगीर के पोते का सार्वजनिक बतिस्मा 1610 में हुआ (यद्यपि यहाँ भी उन्होंने 1611 में पुनः इस्लाम अपना लिया)। दानियाल एवं अब्दुर रहीम खानखाना की पुत्री जाना बेगम साहिब के तीनों पुत्रों के बपतिस्मा के बाद नाम भी बदल दिए गए। ताहमुरास, बाइसंघर और होशंग मिर्जा के पुत्रों के नाम क्रमशः डॉन फिलिप, डॉन कार्लोस और डॉन हैंरीक रखा गया। यह अपने आप में पराकाष्ठा थी। इसके अतिरिक्त जहाँगीर ईसाई पादरियों को प्रतिदिन के हिसाब से तीन रु. से लेकर सात रु. तक देता था। और धार्मिक अवसरों पर वह उन्हें अधिक धन भी देता था।[40] इस प्रकार ईसाई धर्म को उदार शासकों का प्रश्रय मिला।

जहाँ तक इस्लाम एवं हिन्दू धर्म का सम्बन्ध है। ये धर्म उस समय भारत में आ चुका था जब इस्लाम का भारत में उत्कर्ष हुआ था। किन्तु, तब उसका आगमन मित्रता के नाते हुआ था। अरब, फिलस्तीन और मिस्त्र से भारत का प्राचीनतम व्यापारिक सम्बन्ध था।[41] फरिश्ता लिखता है कि मुस्लिम व्यापारी मालाबर तट पर बस गए थे। मालाबार के हिन्दू राजाओं का मुसलमानों के साथ प्रतिष्ठा और दया का व्यवहार था।[42] उदार एवं सहिष्णु हिन्दू शासकों ने शासक के धर्म पालन करते हुए अपनी हर वर्ग और धर्म की प्रजा को संरक्षण दिया। 11वीं सदी में खंभात के कुछ हिन्दूओं ने मुसलमानों की एक मस्जिद पर हमला करके उसे गिरा दिया। तब राजा सिद्धराज ने तहकीकात करके अपराधियों को दंड दिया और मुसलमानों को अपने धन से नई मस्जिद बना के दी।[43] यहाँ के शासकों में स्वधर्म के प्रति पूर्वाग्रह दिखाई नहीं देता हैं। यही वजह है कि भारत में सामासिक संस्कृति की सुदृढ़ परंपरा दिखाई देती है। इसी प्रकार के कई और भी उदाहरण देखने को मिलते हैं।

मालाबार के राजा चेरामन पेरुमल ने मालाबार तट पर 11 मस्जिदें बनवाई थी।[44] गुजरात के वेरवल 1246 ई. के एक संस्कृत शिलालेख से पता

चलता है कि होर्मुज के नूरुद्दीन फीरोज ने चालुक्य राजा अर्जुनदेव के संरक्षण में एक मस्जिद की स्थापना की।[45] हिन्दू स्थापत्य में हिन्दू-मुस्लिम समन्वय का अद्भुत उदाहरण राणा कुम्भा के विजय स्तंभ में देखने को मिलता है। विजय स्तंभ जिसकी तीसरी मंजिल पर कुंभा ने अरबी में नौ बार और आठवीं मंजिल पर आठ बार सूक्ष्म कारीगरी के साथ 'अल्लाह' लिखवाया। विजय स्तंभ जिसे उपेन्द्र नाथ डे ने कुंभा के आराध्य को समर्पित माना है इसी वजह से इसे 'विष्णु ध्वज स्तंभ' कहा है[46] यहीं मत नीलिमा मित्तल ने भी रखे है।[47] कुंभा द्वारा अपने आराध्य को समर्पित इमारत पर मुस्लिमों के पवित्र शब्दों को उत्कीर्ण करना मध्यकालीन धार्मिक उदारता का ज्वलंत उदाहरण दिया है। इसे देखकर अंग्रेज पर्यवेक्षक एच.बी. डल्ब्यू. गरिक (1883-84) यह कहने के लिए विवश हो गया—

"यह खोज विशिष्ट समस्या पैदा करती है, जिसका एकमात्र निदान भी वह स्वयं ही प्रस्तुत करती है कि हिन्दू और मुसलमानों के बीच के विभाजन तीन सदियों पहले आज की तुलना में बेहद कम थे।"[48]

स्थापत्य कला में भी हमें सामासिक संस्कृति के दर्शन होते हैं। ये निर्जीव इमारते विभिन्न धर्मों के संनेगो और मनोभावों की प्रतिमूर्ति है जो सहिष्णुता को पोषित करती है। वैसे तो मध्यकाल की अधिकांश इमारते हिन्दू एवं मुस्लिम की त्राबियत एवं शहतीर शैली पर आधारित है। मुगलकालीन एवं कई हिंदु स्थापत्य पर हिन्दू-मुस्लिम स्थापत्य की समन्वित शैली का प्रभाव दिखाई देता है। मुस्लिम स्थापत्य कला की सर्वोत्कृष्ट इमारत की बात करे तो 'ताजमहल' का नाम आता हैं। ताजमहल पर भी विदेशी वास्तुकला की अपेक्षा भारतीय वास्तु का प्रभाव अधिक है यह उतना ही भारतीय है जितना की सारनाथ का स्तंभ और अजंता की गुफा।[49] जहाँ पं. जवाहर लाल नेहरू मिली जुली संस्कृति के विकास के रूप में ताजमहल का वर्णन करते हुए कहते हैं कि चोटी के मेमारों और कलावंतो ने मुहब्बत के हाथों से आगरा में ताजमहल खड़ा दिया।[50] वास्तव में प्रेम की इमारत ताजमहल यह आमजन अर्थात् उन हिन्दू और मुस्लिम कारीगरों[51] के संयुक्त कौशल की उत्कृष्ट परिणिति थी। यह सामासिक संस्कृति के व्यवहारिक पक्ष को इंगित करता है। जब हिन्दू एवं मुस्लिम कारीगर मिलकर इन इमारतों का निर्माण कर रहे थे और शाहजहाँ के आदर्श को व्यावहारिक रूप दे रहे थे।

साहित्य जिसे समाज का दर्पण कहा जाता है। अत: मध्यकाल के साहित्य पर दृष्टि डाल के भी उस समय के भावों को समझा जा सकता है।

चूंकि इस समय हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म ही मुख्य धर्म थे अत: दोनों के मध्य अंतक्रिया स्वाभाविक थी। इसी का प्रभाव था कि मध्यकाल में कई हिन्दू ग्रंथों का फारसी में अनुवाद हुआ। फिरोजशाह तुगलक, सिकंदर लोदी आदि शासकों के समय अनुवाद हुआ किंतु इस दिशा में अकबर के समय महत्वपूर्ण कार्य हुआ था। अकबर ने फैजी के अधीन अनुवाद विभाग की स्थापना की थी। अकबर के काल में रामायण, महाभारत, अथर्ववेद, राजतंरगिनी, हरिवंशपुराण, पंचतन्त्र इत्यादि अनके ग्रंथों का फारसी में अनुवाद हुआ।[52] सामासिक संस्कृति के लिए अगर किसी मुगल राजकुमार ने कार्य किया है तो वो दारा शिकोह था। यह दारा का हिंदुत्व प्रेम ही था जिसने 50 उपनिषदों कि व्याख्या जैसा दुरूह कार्य सम्पन्न कर दिखाया। उसकी इस अद्भुत कृति का नाम 'मज्मउलबहरैन' था जिसका अर्थ होता है 'दो समुद्रो का मिलन' ये दो समुद्र हिन्दू एवं इस्लाम थे। इस ग्रंथ को देखने पर पता चलता है कि दारा का वेदान्त और तसव्वुफ दोनों पर कितना अधिकार था और उसे समन्वित कर एक नयी संश्लिष्ट भारतीय संस्कृति की स्थापना की। इसी प्रकार अकबर के समय फैजी ने फारसी में 'शारिकुल्मारिफत' (ब्रह्मज्ञान भास्कर) की रचना कर मुस्लिम संसार को वेदान्त का तत्त्वज्ञान देने का प्रयत्न किया था।[53] समन्वय में देशप्रेम का भी महत्वपूर्ण स्थान है। मध्यकाल के भारत को अगर वतनपरस्ती के दृष्टिकोण से देखना हो तो अमीर खूसरो एवं इसामी पढ़ना ज्यादा सही होगा। अमीर खुसरो गंगा-जमना संस्कृति की प्रतीक हिन्दवी भाषा का पहला कवि माना जाता है जो कहता था, "मैं हिन्दुस्तान की तूती हूँ। अगर तुम वास्तव में मुझसे जानना चाहते हो तो हिंदी में पूछो! मैं तुम्हें अनुपम बातें बता सकूंगा।"[54] खुसरो नूहे सिपेहर में भारत देश की प्रशंसा करते हुए उसे 'धरती का स्वर्ग बताता है।' तथा इसके पक्ष में सात प्रमाण भी रखता है।[55] इसी प्रकार 1850 ई. में इसामी ने भी भारत की प्रशंसा में कहा—

समृद्धि है महान उसकी जिसे कहते हैं मुल्क हिन्दोस्तान यह है वह उद्यान जिससे करता है ईर्ष्या स्वर्ग भी धरा-वधु के रूपाभूषण सी इसकी सीमाएँ। जैसे किसी मनमोहिन के चेहरे पर संचित हो सौन्दर्य।

साम्राज्यवादी इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास की विकृत व्याख्या कर इसे दूषित करने का प्रयास किया। साम्राज्यवादी इतिहासकारों द्वारा ऐसा करने का कारण भारत की एकता को खण्डित करना था। 1830 के दशक से ही साम्प्रदायिक विचारधारा का प्रचार एक फैशन के रूप में इतिहास लेखन के माध्यम से आरंभ हो गया था। परन्तु एक वैचारिक संरचना के रूप में इसका

Scanned with Oken Scanner

उदय 1870 तथा 1880 के दशक में हुआ।[57] जिसने आगे चलकर द्विराष्ट्र के सिद्धान्त को पल्लवित किया। उपर्युक्त शोध पत्र में मध्यकाल एवं उससे पूर्व भी भारत में समन्वयवादी संस्कृति मौजूद होने के कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। यहाँ फिर भी यह अतिवादी दावा नहीं किया जा रहा है कि मध्यकालीन समाज एक आदर्श समाज था। मध्यकाल के इतिहास में जजिया कर से लेकर मंदिर तोड़ने व बलात धर्म परिवर्तन तथा गंगा स्नान पर 6 रु. 4 आने का कर[58] जैसे असहिष्णु के दृष्टांत दिखाई देते हैं। कुछ शासकों के क्षणिक लाभ के इन कार्यों से सहिष्णुता आधारित भारत की सामासिक संस्कृति को दूषित नहीं किया जा सकता। मध्यकाल में कबीर जैसे व्यक्ति भी थे जिनके मृत्यु पर हिन्दू और मुस्लिमों में विवाद हो गया कि वे हिन्दू है या मुस्लिम है। ये कबीर की प्रसिद्ध को बताते हैं तथा स्वस्थ सामासिक संस्कृति के मौजूद होने का परिचायक है।

संदर्भ

1. रामचंद्र गुहा, भारत गाँधी के बाद, अनु. सुझांत झा, पेंगुइन बुक्स, गुड़गाँव, 2011. पृ. 12
2. Howard. Michael. The First World War. Oxford University Press, 2002. P.No. 107
3. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014 पृ. 499
4. लल्लन सिंह, रामायण कालीन युद्धकला, प्रकाश बुक डिपो, 2001, पृ. 15
5. Dalal. Roshan. The Religion of India : A Consice Guide to Nine Major Faits. Penguin Books. 2010. P.No. 57
6. रामचन्द्र वर्मा, अरब और भारत, हिंदुस्तान एकेडमी, प्रयाग, 1930, पृ. 11, इतिहास और विचारधारा, इरफान हबीब अनु. रमेश रावत, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली, 2012. पृ. 14 ए.एल. बाशम, अदभुत भारत, अनु. वेंकटेशचंद्र पाण्डे, शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी, आगरा, पृ. 1
7. उदयनारायण राव, विश्व सभ्यता का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2007, पृ. 326
8. अनु. युगजीत नवलपुरी, बाबरनामा, साहित्य अकादमी, दिल्ली, 2102, पृ. 333
9. इतिहास और विचारधारा, पृ. 15
10. राजेन्द्र शंकर भट्ट, महाराणा कुंभा, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली, 2011, पृ. 52

Scanned with Oken Scanner

11. हरविलास शारदा, राणा सांगा, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2012. पृ. 15
12. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014 पृ. 82
13. महात्मा गाँधी, हिन्दू धर्म क्या है? नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली, 2013, पृ. 6
14. धर्मानन्द कोसांबी, भगवान बुद्ध, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2015 पृ. 76
15. के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, 2005. पृ. 92
16. संस्कृति के चार अध्याय. पृ. 94
17. देवदत्त पटनायक, मिथक, अनु. आलोक कुमार, पेंगुइन बुक्स, मुंबई, 2015 पृ. 5
18. एक सद्र विप्रा बहुधा वदन्ति

    दिजेन्द्र नारायण झा, कृष्ण मोहन श्रीमाली, प्राचीन भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली, 2006, पृ. 130
19. प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति, 857
20. चार्वाक दर्शन
21. भगवान बुद्ध, 105
22. हरदेव सिंह, भारतीय इतिहास और साहित्य में सूफी दर्शन, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ 2005. पृ. 115
23. भगवान बुद्ध धर्मानन्द कोसांबी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2015 पृ. 48
24. देवदत्त पटनायक, मिथक, अनु. आलोक कुमार, पेंगुइन बुक्स, मुंबई, 2015 पृ. 105
25. प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति, पृ. 810
26. गुरु नानक, सं. गुरुमुख निहाल सिंह, गुरु नानक देव : एक भूमिका, राधाकृष्णन नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1970. पृ. 1
27. भक्ति आन्दोलन : इतिहास एवं संस्कृति, सं. कुँवरपाल सिंह. मध्ययुगीन सभ्यता का उद्गम और विकास, एम. अतहर अली, वाणी प्रकाशन, दिल्ली. 2004. पृ. 51
28. भारतीय इतिहास और साहित्य में सूफी दर्शन, 126
29. भक्ति आन्दोलन का अध्ययन, रतिभानु सिंह नाहर, किताब महल, इलाहाबाद, पृ.

Scanned with Oken Scanner

225, हरिश्चन्द्र वर्मा, मध्यकालीन भारत, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2009 पृ. 435

30. सूफी दर्शन, 120
31. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2011. पृ. 93
32. जवाहर लाल नेहरू, विश्व इतिहास की झलक। अनु. चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय, सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली, 2013, भा. 1, पृ. 253
33. राजस्थान एवं गुजरात के मध्यकालीन सन्त एवं भक्ति कवि. मदन कुमार जानी, पृ. 114, राजस्थान का इतिहास, गोपीनाथ शर्मा, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, पृ. 414
34. हिन्दी साहित्य का इतिहास, 160
35. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 182
36. के. सी. श्रीवास्तव, पृ. 332
37. विंसेण्ट स्मिथ, अनु. महान मुगल अकबर, राजेन्द्र नाथ नागर, हिंदी समिति, लखनऊ, पृ. 178
38. विंसेण्ट स्मिथ, पृ. 181
39. राहुल सांकृत्यायन अकबर, किताब महल, इलाहाबाद, 1967 पृ. 241
40. Early, Abraham, Emperors of the Peacock Throne. The saga of the Great Mughals. Penguin Books. P.No. 302
41. संस्कृति के चार अध्याय, 206
42. अरब और भारत के सम्बन्ध, रामचंद्र वर्मा, हिंदुस्तान एकेडमी, इलाहाबाद, 1960 पृ. 219
43. सुन्दरलाल, भारत में अंग्रेजी राज, 43
44. भारत में अंग्रेजी राज, संस्कृति के चार अध्याय पृ. 206
45. भक्ति आन्दोलन : इतिहास एवं संस्कृति, पृ. 45
46. कुम्भाकालीन कीर्तिस्तम्भ का प्रतिमा शास्त्रीय अध्ययन, नीलिमा मित्तल, परिमल प्रकाशन, दिल्ली, 2004, पृ. 29
47. महाराणा कुंभा, राजेन्द्र शंकर भट्ट, पृ. 301
48. भक्ति आन्दोलन : इतिहास और संस्कृति 45
49. The Immortal Taj Mahal. R. Nath. Taraporavala sons company. Bombay. 1972. P. 84

Scanned with Oken Scanner

50. डिस्कवरी ऑफ इंडिया, जवाहरलाल नेहरू, अनु. रामचंद्र टण्डन, सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली, 2013, पृ. 307
51. The Immortal Taj Mahal. R. Nath. P. 8
52. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव. मुगलकालीन भारत. शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी, आगरा, पृ. 488
53. दारा शिकोह सिरें अकबर, अनु. हर्षनारायण, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ, 1975, पृ. 15
54. अमीर खुसरो, सं. राज नारायण राय, महाराष्ट्र राष्ट्र सभा, पुणे, 1975. पृ. 58
55. मध्यकालीन भारत, सं. इरफान हबीब, राजकमल प्रकाशन, पटना, 2015. पृ. 23
56. भक्ति आन्दोलन: इतिहास और संस्कृति, पृ. 48
57. विपिन चन्द्र, समकालीन भारत, पृ. 121
58. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, मुगलकालीन भारत, पृ. 314

डॉ. मनीष श्रीमाली
सहायक आचार्य
इतिहास विभाग
मोहनलाल सुखड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

❑ ❑ ❑

Scanned with Oken Scanner